साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 3, अंक 55, फरवरी(द्वितीय) , 2019

कवियों के कवि शमशेर: काव्य संवेदना

डॉ0 राजेश कुमार सिंह यादव

कवि अपने सृजन के दौरान जिन बातो से, घटनाओं से, व्यक्तियों से, संवेदित और प्रतिसंवेदित होता है। उसी से उसके काव्य का निर्माण होता है। यह संवेदना ठोस भी हो सकती है, तरल भी, यथार्थ भी हो सकती है और अयथार्थ भी। शमशेर की संवेदना निजी संदर्भो में फिर सामाजिक, राष्ट्रीय, वैश्विक संदर्भो से होते हुए कभी-कभी ब्राह्मांड में भी विचरती है। परन्तु शमशेर की अधिकतर रचनाएं निज से संवाद है। इसी कारण इन कविताओं में जो कुछ कहा गया है उससे अधिक इनमें अनकहा संवेदन विराजमान है। इसी अनकहे को समझना पाठक के लिए मुश्किल हो जाता है। इन्ही कारणों से शमशेर थोड़े दुरूह कवि हो जाते है। शमशेर की रचनात्मकता का लक्ष्य है अपने आप को देख पाना। तभी तो वह कहते है-

बात बोलेगी
हम नही
भेद खोलेगी
हम नही

शमशेर के संदर्भ में यह तथ्य अविस्मरणीय है कि उनका निज उन्हे एकाकी नही बनाता है। कविता के निजी पलों में कवि के साथ सम्पूर्ण संसार भी उसमें सांस लेने लगता है।

शमशेर के काव्य में एक ओर छायावाद का प्रभाव है तो दूसरी ओंर छायावाद से

हटकर नया भाव, विषय और शिल्प है। शमशेर के काव्य में प्रगतिशील तथा प्रयोगशील तत्व सदैव विद्यमान रहें है। बौद्धिक स्तर पर शमशेर के काव्य में मार्क्सवाद का प्रभाव दिखायी पड़ता है। शमशेर की कविताओं में एक ऊर्जा है बिल्कुल वैसी ही ऊर्जा हम निराला के काव्य में पाते है। शमशेर सदैव मूल्य और जनपक्षधरता की बात करते है-

एक !जनता का
दुखः एक
हवा में उड़ती पताकायें
अनेक
दैत्य, दानव। क्रुर
कंगाल बुध्दिः मजूर घर भर
एक जनता का अमर वर
एक का स्वर
अन्यथा स्वातंत्रय इति।

शमशेर प्रेम और सौन्दर्य के कवि माने जाते है । प्रेम का रंग इनकी कविताओं में गहरा है। शमशेर के काव्य में प्रेम दो संदर्भो में अंकित है। प्रथम निजी संदर्भ और द्वितीय समष्टि संदर्भ । शमशेर का मानना है कि जहां पर हम अपने राग भाव पाते है वही पर सौन्दर्य उत्पन्न होता है तथा अनुभूति के स्तर पर दोनो एक है-

प्रेम का कँवल
कितना विशाल हो जाता है
आकाश जितना
और उसी के दूसरे अर्थ सौन्दर्य हो जाते है
मनुष्य की आत्मा में

शमशेर की गणना उन कवियों में होती है जिनके लिए मार्क्सवाद की क्रांतिकारी आस्था और भारत की सांस्कृतिक परम्परा में विरोध नही है। शमशेर मार्क्सवाद और भारतीय संस्कृति के मेल पर आधारित भावनायें अपने काव्य में उकेरते है। "प्रातः नभ था बहुत नीला शंख जैसे" कविता में शमशेर ने यह सिद्ध कर दिया है कि भोर को नीले शंख जैसा वही कवि देख सकता है जो भारतीय संस्कृति से ओत प्रोत है वैदिक कवियों की तरह वे प्रकृति को पूरी तन्मयता से स्वीकार करते है-

जागरण की चेतना से मैं नहा उट्ठा
सूर्य मेरी पुतलियों में स्नान करता
केश तन में झिलमिलाकर डूब जाता

शमशेर के काव्य में प्रकृति का रूप तो वही है पर नजरिया भिन्न है निराजा जी ने संध्या सुदंरी कविता में चुप-चुप के माध्यम से व्यंजना उत्पन्न की है और चारों ओर चुप का सन्नाटा है। शमशेर इस व्यंजना और संनाटे से होकर गुजरते है -वह कहते है-

मैंने शाम से पूछा
या शाम ने मुझसे पूछा
इन बातो का मतलब?
मैंने कहा-
शाम ने मुझसे कहा
राग अपना है।

शमशेर के प्रकृति चित्रण में वर्णन परम्परा का अनुसरण कम तथा अनुभव का महत्व अधिक है । प्रकृति चित्रण में शमशेर पुराने कवियों के मत से भिन्न दिखते है। प्रकृति चित्रण में वह पुराने कवियों से आगे वर्णन करते है। इसी लिए शमशेर मिट्टी के बजाय आकाश पर अपनी निगाहे टिकाते है-

एक नीला आइना
बेठोस सी चॉदनी
और अन्दर चल रहा हूँ मैं
उसी के महातल में मौन में
मौन इतिहास का
कण किरण जीवित
एक,बस

जहां पंत जी परिवर्तन कविता में आलोड़ित अम्बुधि फेनोन्नत कर शत् शत् फन कहकर प्रकृति का विराट और भयावह रूप प्रस्तुत करते है। वही शमशेर उसी प्रकृति दृष्यों को क्रोशिए से फेन झालर बुनते दिखायी देते है-

चॉदनी की उंगलियां चंचल
क्रोशिए से बुन रही थी चपल
फेन झालर बेल
मानो

शमशेर प्रकृति को केवल प्रकृति या मनुष्य की भांति नही देखते है बल्कि दार्शनिक मनोभाव से जोड़ते है-

कोई
ऑंख मुँदी है न खुली
एक ही चट्टान
लहर पार लहर ....पार
सूर्य के इस ओर ठहरा
स्तम्भ तुला पर सिहरा
मौन जलद कन
ऑंख मुँदी है न खुली

शमशेर ने यहाँ पर ऑंख का खुली और मुदी होना ज्ञान और अज्ञान तथा चेतन और अचेतन के बीच की दशा को चित्रीत किया है। पंत की भांति शमशेर की कविता दर्शन पर समाप्त नही होती है बल्कि मनुष्य और प्रकृति के संष्लिष्ट रूप में जुड़ती है।

शमशेर की काव्य संवेदना को समझने के लिए पाठक को स्वयं अपने स्तर से ऊँचा उठना पड़ता है क्योकि शमशेर स्वयं चुनौति देते है-

मेरी कविताओं को
अगर वो उठा सके
और एक घूँट
पी सके
अगर .....

जहां पर पाठक सहजता और अनुभूति के साथ शमशेर की कविताओं को पढ़ता है तो कविता की संवेदना पर्त दर पर्त खुलती जाती है अन्यथा शमशेर दुरूह कवि ही बन जाते है । वस्तुतः शमशेर जन मन के कवि है। उनके योगदान का मूल्यांकन करना या उनकी कविताओं की व्याख्या करना सूर्य को दीपक दिखाने जैसा है।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें